श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल, राजस्थान का उद्‌बोधन

सेठ आनन्दराम जैपुरिया विद्यालय
कॉम्फेस्ट–20

दिनांक 14 अक्टूबर 2020 **समय – दोपहर 12.15 बजे**

राजभवन, जयपुर

उत्तर प्रदेश से मेरा विशेष जुडाव है। यह मेरी जन्मभूमि है और कर्म भूमि भी रही है। व्यक्ति कहीं भी रहे, परन्तु जन्मभूमि की माटी की सुगन्ध उसे अपनी ओर आकर्षित करती रहती है।

सेठ आनन्दराम जैपुरिया विद्यालय, कानपुर के छात्रों द्वारा जब मुझे कॉम्फेस्ट–20 में बतौर मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रण मिला, भले ही यह आभासी कार्यक्रम है, परन्तु इसमें सम्मिलित होने के लोभ का मैं संवरण नही कर सका।

विगत 20 वर्षों से कॉम्फेस्ट में छात्रों द्वारा अनेक तकनीकी व सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करवाये जाते रहे हैं। इसके लिए आप सभी प्रशंसा के पात्र हैं। आज विश्व जहाँ एक ओर कोरोना महामारी रूपी आपदा से जूझ रहा है, वहीं ज्यादातर लोग मानसिक अवसाद से ग्रसित हो रहे हैं।

ऐसे में जैपुरिया विद्यालय के छात्रों ने इस आपदा को अवसर के रूप में परिवर्तित कर दिया है। आभासी कक्षाओं में पढ़ते–पढ़ते इन्होंने 4 दिवसीय कॉम्फेस्ट उत्सव को आभासी करवाने का निश्चय किया। चार दिन तक चलने वाले इस उत्सव में ज्ञान–विज्ञान, कम्प्यूटर व साहित्य से सम्बन्धित अनेक प्रतियोगिताएँ आयोजित करवाई जा रही हैं। इस बार भी देश–विदेश के लगभग 40 सुप्रसिद्ध विद्यालयों ने भाग लिया है। सभी को मेरी शुभकामनाएं।

मैं इन विद्यार्थियों के दृढ़ निश्चय, आत्मविश्वास व लगन की प्रशंसा करता हूँ कि विपरीत परिस्थितियों में भी यह नकारात्मकता से सकारात्मकता की ओर बढ़े। मेरा मानना है कि विद्यालयीय स्तर पर आभासी तरीके से होने वाली यह प्रतियोगिता अपने–आप में श्रेष्ठ है। वास्तव में इनकी नेतृत्व क्षमता सराहनीय है, इनके हौसलों को मैं नमन करता हूं।

शिक्षा में मानव मूल्यों का उल्लेख गांधीजी ने किया था। आज के युवाओं के लिए एक सफल, सुखी और समृद्ध जीवन जीने की निष्ठा मानवीय मूल्यों से आ सकती है। मूल्य शिक्षा मूल रूप से यह कहती है कि सभी मनुष्यों का जीवन लक्ष्य एक ही है, वह है निरंतर सुख से जीना। इसके लिए हम सब में समान क्षमता भी है, हम सब केवल योग्यता के स्तर पर भिन्न है। शिक्षा से योग्यता को बढ़ाया जा सकता है। आवश्यकता है कि प्रत्येक व्यक्ति की क्षमता के अनुसार एक सही कार्यक्रम बनाया जाए।

प्रारम्भिक रूप में बच्चों को सिखाना, संस्कार देना शिक्षकों, परिवार के सदस्यों और समाज की जिम्मेदारी है, किन्तु यदि विद्यार्थी कुछ सीखने से रह जाता है, तो उसे पूरा करने के लिए शिक्षा का गहनता से अध्ययन करना होगा, ताकि व्यक्ति अपनी उच्चतम योग्यता तक पहुँच सके।

गत 26 नवम्बर को पूरे देश में 70 वां संविधान दिवस मनाया गया। आपको बताना चाहता हूँ कि संविधान हमारा मार्गदर्शक है। हमारा मूल ग्रन्थ है। संविधान की प्रस्तावना में राष्ट्र की मूल भावना का उल्लेख है। संविधान ने हमें मौलिक अधिकार दिये हैं। संविधान के अनुच्छेद 51 क में हमारे द्वारा किये जाने वाले कर्त्तव्यों को परिभाषित किया गया है। मौलिक अधिकार और कर्त्तव्य, यह दोनों ही संविधान के प्रमुख स्तम्भ हैं। मौलिक अधिकारों की तो हम बात करते हैं, लेकिन आवश्यकता है कि हम हमारे कर्त्तव्यों को जानें, समझें और उनके अनुरूप ही अपना कार्य और व्यवहार करें। आप लोग युवा हैं। राष्ट्र निर्माण में आपको महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। इसलिए संविधान में प्रदत्त कर्त्तव्यों को आप लोग आचरण में लाकर आगे बढ़ें।

यदि हम सभी ने ऐसा प्रयास किया तो निश्चित तौर पर भारत देश को आगे बढ़ाने में और स्वयं के जीवन को भी प्रोनन्त करने में यह कदम बेहतरीन साबित होगा। आमजन को संविधान की जानकारी होना आवश्यक है। राष्ट्रीय एकता, अखण्डता व सामाजिक समस्सता के लिए कर्त्तव्यों का निर्वहन करना होगा। मैं चाहता हूं कि विश्वविद्यालायों में युवाओं को मूल कर्त्तव्यों का ज्ञान कराने के लिए अभियान चलाया जाये। देश की युवा पीढी को मूल कर्त्तव्यों के बारे में बताया जाना आवश्यक है। संविधान के अनुच्छेद 51 क पर विचार – विमर्श करने के लिए गोष्ठियां व सेमीनार आयोजित की जायें।

नई शिक्षा नीति में सहपाठ्यक्रम और पाठ्येतर गतिविधियों के साथ–साथ व्यवसायिक एवं गैर व्यवसायिक विषयों की खोज की अनुमति देने वाली लचीली पद्धति ''ड्रॉपआउट'' कम कर सकती है।

साथ ही Multiple Entry एवं Exit Point से सिस्टम में प्रवेश करने के लिए ''ड्रॉपआउट'' के लिए आसान बना देती है। नीति की सबसे बड़ी ताकत इसकी बहु–अनुशासनात्मक और विद्यालय के स्तर पर छात्रों द्वारा अपनी पसन्द के आधार पर विषय चुन पाना है, इससे सिस्टम के भीतर छात्रों के लिए कई प्रवेश बिन्दु और विकास बिन्दु खुल गये हैं जो इस नीति को स्वागत योग्य बनाते हैं।

नई शिक्षा नीति में बहुविषयक शिक्षा में STEM के अन्तर्गत विज्ञान, तकनीकी, इंजीनियरिंग एवं गणित का समावेश किया गया है। मेरा अनुरोध है कि इसमे कृषि और कम्प्यूटर को और स्थान देकर STEAM-C (Science, Technology, Engineering, Agriculture, Maths, Computer) के रूप में परिवर्तन करने से उच्च शिक्षा और रोजगार परक बनेगी।

कहा जाता है कि सभ्यता और संस्कृति का विकास नदियों के किनारे बसे शहरों में होती है, वास्तव में गंगातट पर स्थित कानपुर शहर का सेठ आनन्दराम जैपुरिया विद्यालय इसी का पर्याय है।

इस शिक्षण संस्थान के अध्यक्ष माननीय श्री शिषिर जैपुरियाजी को मैं बधाई देता हूँ, जिनके विद्यालय रूपी खजाने में ऐसे अनगिनत रत्न हैं। विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती शिखा बनर्जी भी प्रशंसा की पात्रा है, जिनके कुशल नेतृत्व व संरक्षण में विद्यार्थी पुष्पित व पल्लवित हो रहे हैं। सभी विद्यार्थियों को मेरा कोटि–कोटि आशीर्वाद है कि ये अपनी प्रसिद्धि व कामयाबी का परचम देश–विदेश में फहरायें। इन सभी में मैं उज्ज्वल भारत की स्पष्ट तस्वीर देख रहा हूँ । अगर भारत का भविष्य ऐसे होनहारों के हाथों में होगा, तो इसका प्रकाश कितना सुनहरा होगा। आप सभी को बहुत– बहुत शुभकामना देता हूं।

मैं कॉम्फेस्ट 2020 का आगाज़ करता हूँ।

धन्यवाद। जय हिन्द।